Roll No. ..... Total Pages : 3

LMDE/M-24 **10271**

INDIAN METAPHYSICS

Paper–PHI-HC-202

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

Note : Attempt *five* questions in all, selecting *one* question from each unit. Objective type question is compulsory. All questions carry equal marks.

नोट : प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। वस्तुनिष्ठ प्रकार प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

UNIT–I (इकाई–I)

1. Discuss in detail the concept of Isvara with reference to Nyaya. 16

न्याय के संदर्भ में ईश्वर की अवधारणा का विस्तृत विवेचन करें।

2. Discuss the role of Isvara with reference to Ramanuja. 16

रामानुज के सन्दर्भ में ईश्वर की भूमिका का विवेचन करें।

UNIT–II (इकाई–II)

3. Explain Nyaya's view regarding self. 16

आत्मा के संबंध में न्याय दर्शन के विचारों की व्याख्या करें।

4. Explain the vedantic conception of self. 16

आत्मा के सम्बंध में वेदान्तिक अवधारणा की व्याख्या करें।

UNIT–III (इकाई–III)

5. Critically evaluate the concept of substance in Jainism. 16

जैन दर्शन के द्रव्य की अवधारणा का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।

6. Write a note on Asadkaryavada. 16

असत्कार्यवाद पर एक नोट लिखें।

UNIT–IV (इकाई–IV)

7. Discuss Buddhism views to attain Nirvana. 16

निर्वाण प्राप्ति के संदर्भ में बौद्ध दर्शन के विचारों का विवेचन करें।

8. What is Bondage? Discuss with reference to Sankhya philosophy. 16

बंधन क्या है? सांख्य दर्शन के सन्दर्भ में विवेचन करें।

Compulsory Question (अनिवार्य प्रश्न)

Objective Type Question (वस्तुनिष्ठ प्रकार प्रश्न)

9. State whether the following statements are True or False : (8×2=16)

(a) Vaisesika believed in God.

(b) The founder of Nyaya philosophy was Gautam.

(c) The Word 'Jiva' used for self in Jain Philosophy.

(d) Kapil was the founder of Sankhya Philosophy.

(e) Categories are seven according to Vaisesika.

(f) Satkaryavada related to Sankhya Philosophy.

(g) Nobel Truths are four in number.

(h) Dukha (suffering) are four according to Sankhya Philosophy.

बताएं कि निम्न कथन सत्य हैं या असत्य :

(क) वैशेषिक ईश्वर को मानते हैं।

(ख) न्याय दर्शन के संस्थापक गौतम थे।

(ग) जैन दर्शन में जीव शब्द आत्मा के लिए प्रयोग किया है।

(घ) सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल थे।

(ङ) वैशेषिक के अनुसार पदार्थ संख्या में सात हैं।

(च) सत्कार्यवाद सांख्य दर्शन से संबंधित है।

(छ) आर्य सत्य संख्या में चार हैं।

(ज) सांख्य दर्शन के सन्दर्भ में दुःख चार हैं।